खंड–3: साक्षात्कार

गोरख पाण्डेय

व्यक्ति और रचना

संपादक
गोपाल प्रधान • रविरंजन

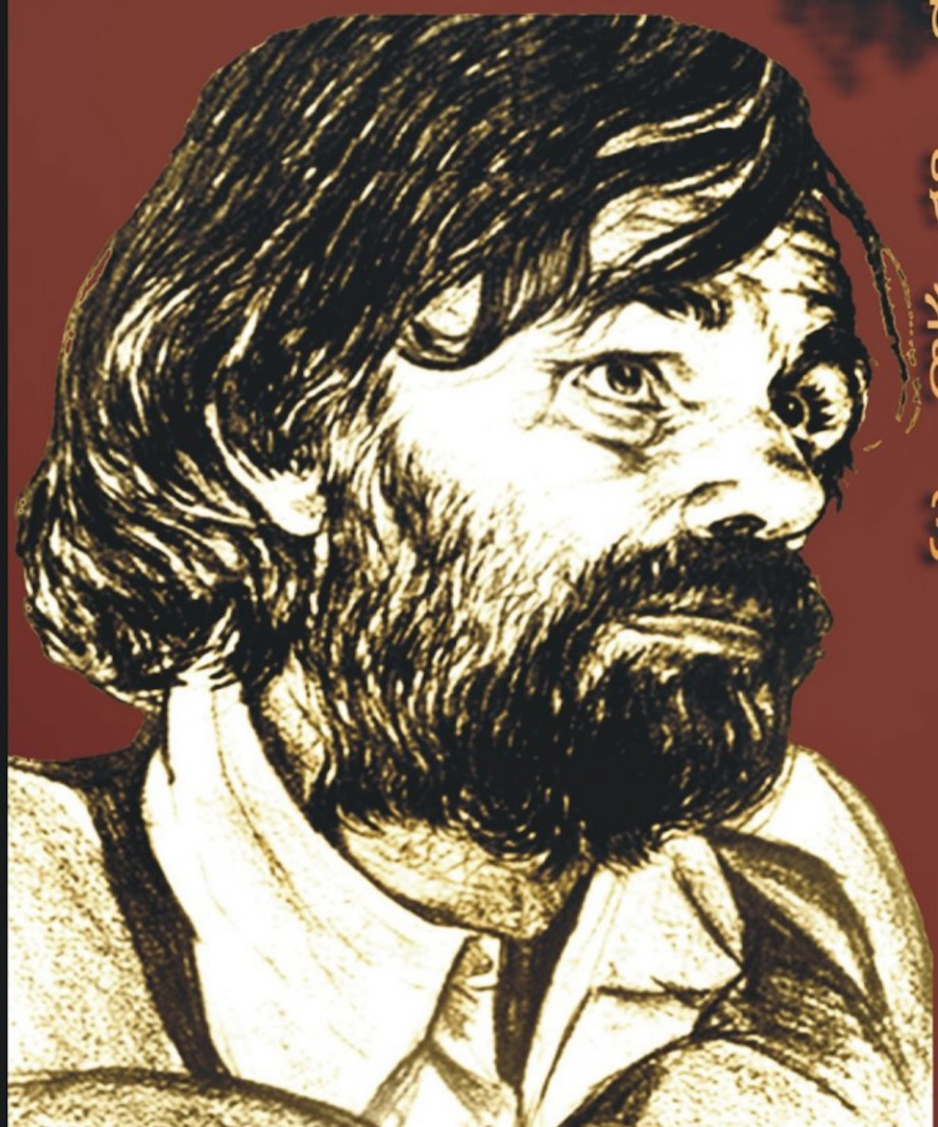

चैन की बाँसुरी बजाइये आप
शहर जलता है और गाइये आप
हैं तटस्थ या कि आप नीरो हैं
असली सूरत ज़रा दिखाइये आप

– गोरख पाण्डेय

गोरख पाण्डेय

व्यक्ति और रचना

(खंड-3: साक्षात्कार)

गोपाल प्रधान

रविरंजन

अनुक्रम

संपादकीय: गोरख साहित्य का परिशिष्ट गोपाल प्रधान

खण्ड: तीन

(साक्षात्कार)

कर्मेन्दु शिशिर से राजीव कुमार और गौरव आनंद की बातचीत

अवधेश प्रधान से संतोष कुमार मिश्रा की बातचीत

आलोकधन्वा से राजीव कुमार और गौरव आनंद की बातचीत

दिनेश कुमार शुक्ला से वेंकटेश कुमार की बातचीत।

गोरख पाण्डेय से मनोहर नायक की बातचीत

संपादकीय

गोरख साहित्य का परिशिष्ट

गोरख पांडे का जन्म 1945 में देवरिया जिले के गाँव पंडित का मुंडेरवा में हुआ था। इस लिहाज से अगर वे आज जीवित रहते तो उनकी उम्र सत्तर साल होती। हिंदी कविता में उनका योगदान अविस्मरणीय है हालांकि उसे भुलाने के सभी तरीके आजमाए जाते हैं। इसके बावजूद गोरख की कविता किसी जिद्दी धुन की तरह अनपेक्षित जगहों पर बिना किसी पूर्व सूचना के बज उठती है। जब भी कोई जनांदोलन सर्वानुमति को धत्ता बताते हुए चुप्पी तोड़कर जाग जाने के लिए विवश करता है तो गोरख की कविता पोस्टरों पर जमीं से उठते नगमे की तरह आ विराजती है। जीवित रहते ही उनकी कविता इतनी लोकप्रिय हो चुकी थी कि हिंदी भाषी क्षेत्र के लगभग सभी आंदोलनकारियों की जुबान पर लेखक का नाम जाने बिना भी चढ़ी रहती थी। मुक्तिबोध के बाद इतनी विचार सघन कविता गोरख ने ही लिखी। नक्सलबाड़ी ने जो सृजनात्मक ऊर्जा पैदा की उसकी सबसे परिपक्व उपलब्धि हिंदी में गोरख पांडे थे। गोरख की कविताओं के अनुवाद भारत में पंजाबी, तेलुगु और बांगला भाषाओं में हुए थे जो नक्सल आंदोलन की सांस्कृतिक आंच से सुलगती भाषाएं थीं। इसके अलावे केदारनाथ सिंह की मौखिक सूचना के अनुसार कुर्सी सीरीज की उनकी कविताओं का अनुवाद रूसी में प्रकाशित हुआ था।

उनकी कविता में विचार तत्व की प्रमुखता के साथ ही जुड़ा हुआ है उनका वैचारिक लेखन। यह लेखन उन्होंने बैठे ठाले नहीं किया था। नौजवानों की एक पूरी पीढ़ी ने साथ मिलकर यह वैचारिक संघर्ष चलाया और अपनी बौद्धिक बेचैनी को मकसद की खोज का सही रास्ता दिखाया। यही कारण है कि उनकी कविता और लेखन के सिलसिले में अनेक शोधार्थियों ने शोध प्रबंध विभिन्न विश्वविद्यालयों में जमा किए हैं। स्वाभाविक रूप से इनमें से ज्यादातर जे.एन.यू. में जमा हुए हैं।

गोरख पांडे की इस वैचारिक यात्रा को उनके लेखन से तो समझा ही जा सकता है लेकिन उसका एक बड़ा स्रोत उनके साथियों के संस्मरण भी हैं। इनमें से अधिकतर संस्मरण उनकी आत्महत्या के बाद लिखे गए। इनमें से कई उस समय के हिंदी अखबारों में छपे। ज्यादातर संस्मरणों में एक तरह की या तो अपराध भावना थी

या अपनी जिम्मेदारी से पीछा छुड़ाने के तर्क थे। कुछ में तो गोरख पर अपने अहसानों की कैफियत भी दी गई थी। इन संस्मरणों के अतिरिक्त एक संस्मरण नेपाल की एमाले (एकीकृत मार्क्सवादी-लेनिनवादी) पार्टी के नेतृत्व में गठित मदन भंडारी सरकार में शिक्षा मंत्री रहे और नेपाली के प्रख्यात साहित्यकार मोदनाथ प्रश्रित का था। मूल रूप से नेपाली में 'अब छैनन मेरा प्रिय साथी गोरख पांडे !' शीर्षक से प्रकाशित इस संस्मरण का बाद में हिंदी अनुवाद हुआ । मोदनाथ जी संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में गोरख पांडे के सहपाठी रहे थे । गोरख जी इस विश्वविद्यालय के छात्रा संघ के प्रथम अध्यक्ष रहे थे। इसी तरह भाकपा माले के वर्तमान महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने भी उन पर लिखा। आत्महत्या के तुरंत बाद पटना से निकलने वाली 'नई संस्कृति' का विशेषांक छपा। इसके बाद जब 'आलोचना' पत्रिका का विशेषांक निकला तो उसमें गोरख के मित्रों और परिचितों के अनेक संस्मरण शामिल थे। इसमें बिरला छात्रावास में साथ रहे बलराज पांडे ने पत्नी के साथ उनके रुख को लेकर सवाल खड़ा किया था। छाया इस मान्यता की थी कि विवाह हो जाने पर पत्नी के साथ न रहना या उसे साथ न रखना अनैतिक है। चमनलाल, अब्दुल बिस्मिल्ला आदि के संस्मरण भी थे। इनके अलावा गोरख के पुराने मित्र और सहकर्मी महेश्वर ने पटना से निकलने वाली पत्रिका 'समकालीन जनमत' में दो संपादकीय लिखे। उसी पत्रिका ने महेश्वर की मृत्यु के बाद जो विशेषांक निकाला उसमें महेश्वर का विस्तृत संस्मरण था और उसका एक बड़ा हिस्सा गोरख पर था। दिवंगत साथी अनिल सिन्हा ने भी उन पर एक संस्मरण लिखा था जो उनकी रचना प्रक्रिया के कुछ नए पहलुओं पर रोशनी डालता है। अनिल सिन्हा की मृत्यु के बाद इसका प्रकाशन 'प्रसंग' के संस्मरण विशेषांक में हुआ। पिछले कुछ दिनों में शिव शंकर मिश्र ने जे.एन.यू. में उनके जीवन और उर्मिलेश ने उनकी प्राथमिताओं को स्पष्ट करने वाले संस्मरण उन पर लिखे। ये हिंदी में तेजी से फैल रही आभासी (वेब) दुनिया के कुछ प्रमुख ब्लागों में प्रकाशित हुए। हाल ही में प्रकाशित तुलसी राम की आत्मकथा के दूसरे खंड 'मणिकर्णिका' में भी गोरख पांडे आद्यंत मौजूद हैं और आत्मकथा को पढ़कर ही समझा जा सकता है कि उनकी यह उपस्थिति आकस्मिक नहीं है। गोरख के जीवन को अद्भुत तटस्थता के साथ देखने के क्रम में तुलसी राम ने उनके कुछ ऐसे अंतर्विरोधों पर भी उंगली रखी है जिनसे उनकी आत्महत्या की गुत्थी भी कुछ हद तक सुलझाई जा सकती है ।